यज्ञों के ऐसे अनेक आनुषंगिक लाभ भी हैं, जिनसे अन्त में बन्धनमुक्ति हो जाती है। वेदानुसार, यजन से सब क्रियाओं का परिष्कार होता है—

आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः सत्त्वशुद्धौ।
ध्रुवाः स्मृतिः स्मृति-लम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।।

यजन द्वारा आहार शुद्ध हो जाता है तथा आहार-शुद्धि से सत्त्व-शुद्धि होती है। सत्त्व-शुद्धि से स्मृति के सूक्ष्म भावों की शुद्धि होती है, जिससे मुक्ति-पथ के चिन्तन की योग्यता प्राप्त हो जाती है। इस समग्र पद्धति से कृष्णभावना उद्भावित हो उठती है, जो वर्तमान विश्व की महती आवश्यकता है।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।।१२।।

इष्टान्=इच्छित; **भोगान्**=जीवन-धारण के लिए आवश्यक पदार्थों को; **हि**=अवश्य; **वः**=तुम्हें; **देवाः**=देवता; **दास्यन्ते**=देंगे; **यज्ञभाविताः**=यज्ञ द्वारा संतुष्ट हुए; **तैः**=उनके द्वारा; **दत्तान्**=दिये हुए पदार्थों को; **अप्रदाय**=दिये बिना; **एभ्यः**=देवताओं के लिए; **यः**=जो; **भुङ्क्ते**=भोगता है; **स्तेनः**=चोर है; **एव**=निश्चय; **सः**=वह।

अनुवाद

नाना प्रकार के जीवनोपयोगी पदार्थों के अधिकारी देवता यज्ञ से प्रसन्न होकर मानव की सब आवश्यकताओं को पूर्ण कर देते हैं। इसलिए जो पुरुष उनके द्वारा दिये गये भोगों को उन्हें पुनः अर्पण किये बिना भोगता है, वह निश्चित चोर है।।१२।।

तात्पर्य

देवता भगवान् श्रीविष्णु द्वारा भोगसामग्री प्रदान करने के लिए नियुक्त किये गये हैं। इसलिए शास्त्रीय यज्ञों के द्वारा उन्हें सन्तुष्ट करना आवश्यक है। वेद में विभिन्न देवताओं के निमित्त नाना यज्ञों का विधान है। परन्तु इन सबके परम लक्ष्य तो श्रीभगवान् ही हैं। जो मनुष्य श्रीभगवान् के तत्त्व को नहीं समझ सकता, उसी के लिए देवयज्ञ का विधान किया गया है। अनुष्ठाता के गुणों के अनुसार वेद में भिन्न-भिन्न यज्ञों का निर्देश है। देवोपासना गुणानुसार ही होती है। उदाहरण के लिए माँसाहारियों के लिए प्रकृति के घोर रूप—काली की उपासना और पशु-बलि का विधान है। परन्तु जो सत्त्वगुण में स्थित है, उसके लिए केवल भगवान् श्रीविष्णु की दिव्य आराधना उपदिष्ट है। अतः यह सिद्ध होता है कि सब यज्ञों का आत्यन्तिक प्रयोजन शनैः-शनैः शुद्धसत्त्व के स्तर को प्राप्त कराना है। साधारण लोगों को कम से कम 'पंचमहायज्ञ' तो अवश्य ही करने चाहिएँ।

यह स्मरण के योग्य है कि मानव समाज के लिए जो भी पदार्थ आवश्यक हैं, उन का अनुदान देवता करते हैं, जो श्रीभगवान् के प्रतिनिधि हैं। मनुष्य स्वयं किसी भी पदार्थ का सृजन नहीं कर सकता। मानव समाज के सारे खाने योग्य पदार्थों के दृष्टान्त